चित्शक्ति विलास

स्वामी मुक्तानन्द

यहाँ पर एक सत्य बात बताना चाहता हूँ जिससे ध्यान का उपासक दृढ़ निष्ठावान बने तथा उसके शरीर में चितिशक्ति के प्रभाव और श्रीगुरुदेव के प्रत्यक्ष अस्तित्व की पूर्ण आस्तिक्य बुद्धि रहे। वह सोचे कि जैसे मेरी नाक, कान, आँख, जिह्वा और मुख सत्य हैं वैसे ही मेरे अन्दर व्याप्त श्रीगुरु सत्य हैं। प्यारे सिद्धविद्यार्थियो! इस विषय का सूक्ष्मता से मनन करो। श्रीगुरु में और पारमेश्वरी अनुग्रहिका शक्ति में पक्की निष्ठा रखो।

ज़रा विचार करो। जब एक डॉक्टर शरीर के किसी एक स्थान में इंजेक्शन देता है तब वह शरीर में प्रत्यक्षरूप से फैलता है। तुम्हें कुछ ऐसे इंजेक्शनों का भी अनुभव होगा कि जिनके प्रभाव से शरीर का रक्त तप जाता है अथवा यदि कोई वैद्यराज की छोटी-सी गुटिका खाता है तो शरीर का रोग निकल जाता है। उसका कितना गुण है, उसकी कितनी शक्ति है जो तुम्हारी नस-नस में, शरीर के अणु-अणु में फैल सकती है और फैलकर वहाँ की बीमारी को दूर कर देती है। यह तो तुम्हारी प्रत्यक्ष अनुभूति है।

ठीक उसी तरह सद्गुरु ब्रह्मानन्दरूप से विलसित हुई पराशक्ति को लेकर, सर्व अनर्थों की कारणरूप अविद्या का संहार करने वाली शक्ति को लेकर तुम्हारे अन्दर दीक्षानिमित्त से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप से दृष्टि, शब्द, संकल्प, सहवास अथवा किसी अंग की स्पर्श-क्रिया से आप ही प्रवेश करता है। प्रवेश करके सप्तधातु में सप्तधातुमय, सर्व इन्द्रियों में सर्व इन्द्रियमय, पंचकोषों में कोषमय, नख-शिखान्त तुम्हारे अन्दर मूर्तिमन्त होकर रहता है। फिर तुम्हें अन्दर से मार्गदर्शन मिलना, साक्षात्कार होना बहुत कठिन नहीं है।

ऐसे गुरु के ज्ञान से दूर, प्रेम से दूर, निष्ठा से दूर, आज्ञापालन से दूर होने से वह भी दूर हो जाता है। वस्तुतः वह मूर्तिमन्त होकर तुम्हारे अन्दर क्रियाशक्ति के रूप में रहता है। तुम्हारे अन्दर इस प्रकार रहते हुए, तुम्हारे अन्दर से तुमको कुछ बतलाना, कुछ सिखलाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मुक्तानन्द इतना सत्य कहता है कि श्रीगुरु पूरी तरह तुम्हारे हैं, परन्तु तुम पूरी तरह उनके नहीं हुए हो। वे तुमसे किंचित् भी दूर नहीं हैं, तुम ही उनसे दूर हो। इसी कारण अन्तर के नित्य नवीन साक्षात्कार से तुम कुछ दूर हो जाते हो।

मेरी गुरुनिष्ठा बड़ी पक्की थी। कहीं भी जाने से मेरे पास गुरु का फ़ोटो होना ज़रूरी था। घूमने को जाता तो साथ फ़ोटो, खाने को बैठता तो साथ फ़ोटो। सोते समय भी फ़ोटो साथ में लेकर सोता। इतना ही नहीं स्नानगृह में भी फ़ोटो रखता था। लोग चाहे कुछ भी कहें। अस्तु।

श्रीगुरुदेवरूप अन्तर-ज्योति से अथवा पहले जिसका मैंने वर्णन किया है उस सर्वज्ञलोक से सूचना मिली—'अरे मुक्तानन्द! नीलेश्वरी के दर्शन से जीवन्मुक्ति प्राप्त होने पर भी, तुरीयानन्द की अनुभूति होने पर भी, अभी पूर्ण प्राप्ति बाकी है।' दिव्य साक्षात्कार यह नहीं। उसके लिए तो तुम्हें और भी नील में प्रवेश करना होगा।

अन्दर से चिति पारमेश्वरी का यह सन्देश मिला। मैं इस आदेश को सत्य मानकर ध्यान को बढ़ाने लगा। जैसे-जैसे ध्यान बढ़ा, नीलेश्वरी भी अधिक समय तक स्थिर खड़ी रहने लगी। जैसे-जैसे वह ठहरी रहती, वैसे-वैसे उसका तेज बढ़ता। जितने समय वह स्थिर रहती उतनी ही उसकी रीति-नीति, चमत्कार, नवीनता नई-नई होती।

सच पूछो तो क्या वह नील है या श्रीनीलकण्ठ? वह नील है या नील रंग के श्रीनित्यानन्द? वह नील है या नीले रंग की नीलेश्वरी भवानी उमाशक्ति कुण्डलिनी?—ऐसी अनन्त भावनाएँ अन्तर में उमड़तीं। नीलेश्वरी अब नज़दीक आती चली।

जितना-जितना नील बढ़ता, उसकी चमक बढ़ती, उतना-उतना मुक्तानन्द बढ़ता, मुक्तानन्द बदलता, मुक्तानन्द खुलता, मुक्तानन्द सर्वत्र पसरता और समझता कि मुक्तानन्द क्या है। जो-जो गति नील की होती, वही-वही गति मुक्तानन्द की होती। अब नील में मेरी निष्ठा और भी दृढ़ हो गई। जिस प्रकार शरीर के अवयवों में 'वे मेरे हैं' या 'वे मैं हूँ' ऐसी प्रत्यक्ष निष्ठा होती है वैसी नील में हो गई।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१७] पृष्ठ १७७-१७९।